जैव विविधता का संकट

डॉ. दिनेश मणि

आज पर्यावरणविदों और इकोलॉजी (पारिस्थितिकी विद) के सामने जैव विविधता का संरक्षण एक महत्वपूर्ण समस्या बनकर खड़ा है। जैव विविधता से हमारा आशय तमाम छोटे-बड़े पौधों तथा मनुष्य सहित सभी जीवों की विभिन्न जातियों व प्रजातियों से है। इन्हीं से जलीय तथा स्थलीय इको तन्त्र का निर्माण होता है और कई तरह के कामकाज सम्पादित होते हैं। ध्यान देने योग्य बात यह है कि जैव विविधता की सीमा में मात्र जंगली या प्राकृतिक जीव ही नहीं अपितु पालतू प्रजातियों (जैसे उपयोगी फसलें व पालतू जानवर) तथा उस अनुवांशिक सामग्री (जैसे बीज इत्यादि) को भी शामिल किया गया है। जो सदियों से हमारे जीवन की अनिवार्य व मूलभूत आवश्यकता रही है।

जैव विविधता पर इतनी अधिक चर्चा करने तथा अन्तर्राष्ट्रीय संधि तैयार करने के कई कारण हो सकते हैं। सबसे महत्वपूर्ण कारण तो यह है कि आज यह साफ तौर पर अनुभव किया जा रहा है कि पौधों तथा जीवों की कई दुर्लभ प्रजातियों का भविष्य संकट में है क्योंकि

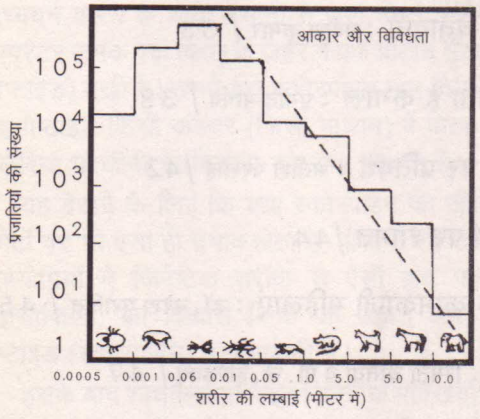

धरती के रहवासी जीवों में से एक बड़ा हिस्सा ज़मीन पर रहने वाले जीवों का है। इस चित्र में ज़मीन पर रहने वाले विभिन्न आकार के जीवों की कुल प्रजातियां प्रदर्शित की गई हैं। स्पष्टतः 5 मि.मी. से 1 सें.मी. के बीच आकार वाले वर्ग में विविधता अपने चरम पर होती है। इसके बाद वह कम होने लगती है।

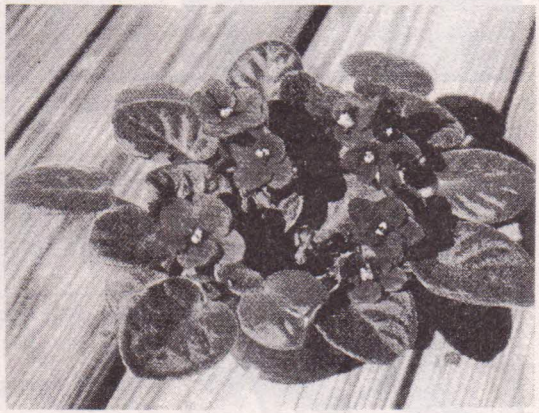

अफ्रीकन वॉयलट: ये जाने-पहचाने घरेलू पौधे अपने प्राकृतवास दक्षिण अफ्रीका से पूरी तरह से लुप्त हो चुके हैं। इन पर दुनिया से विलुप्ति का खतरा तो नहीं है लेकिन इनकी जंगली प्रजाति शायद खत्म हो चुकी है।

उनके प्राकृतिक निवास स्थान तेज़ी से खत्म होते जा रहे हैं। चाहे भारत में हिमालय या गढ़वाल क्षेत्र के जंगल हों, ब्राज़ील में अमेज़न घाटी के जंगल हों, मलेशिया के इमारती लकड़ी के वन हों या घाना के झाड़ीदार सघन वन, सभी तेज़ी से खत्म होते जा रहे हैं। नतीजतन प्रजातियां हर दिन से लेकर हर घंटे की दर से गुम होती जा रही हैं। विनाश की यही दर कायम रही तो अगले दो-तीन दशकों में दुनिया की प्रजातियों का लगभग दसवां हिस्सा नष्ट हो चुका होगा।

अर्थशास्त्री तथा पारिस्थितिकीविद् इस बात से सहमत हैं कि जैव विविधता मानवता के लिए विशेष महत्व रखती है। लोग अपनी आवश्यकताओं के लिए जैव विविधता पर अप्रत्यक्ष रूप से निर्भर हैं। विकसित देश तो ऐसी संधि के लिए दबाव डाल रहे हैं जिसमें वनों को 'वैश्विक सम्पत्ति' घोषित कर इसके इस्तेमाल के नियम बनाए जाएं। इन देशों की चिन्ता यह भी है कि वनों के विनाश के साथ-साथ विभिन्न जीव-जन्तुओं का भी विनाश हो रहा है। हार्वर्ड के जाने माने जीव विज्ञानी ई.ओ. विल्सन इसे 'जीवन का विनाश' कहते हैं। 1 7 0 करोड़